*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*
*Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540*

# चीनी यात्रियों द्वारा वर्णित भारतीय समाजः एक आर्थिक अध्ययन

**Kritika Pareek[1]* Dr. Shish Ram Boyat[2]**

[1] Research Scholar, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Associate Professor, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan

***सारांश - प्राचीन काल से समाज का उत्कर्ष मनुष्य के आर्थिक जीवन की सम्पन्नता, समान्नति और सुख-सुविधा पर निर्भर करता रहा है। व्यक्ति का भौतिक और लौकिक सुख उसके जीवन के आर्थिक विकास से प्रभावित होता है। यह सही है कि समय-समय पर मनुष्य के आर्थिक कार्यक्रम उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप घटते-बढ़ते और परिवर्तित भी होते रहे हैं। किन्तु आर्थिक जीवन का मूल आधार कृषि और व्यापार रहा है। इसमें कोई अन्तर नहीं आ पाया है। आज भी विश्व का समाज इन्हीं दो आधारों पर टिका है। अतः आर्थिक जीवन को उत्प्रेरित करने वाली ये प्रवृत्तियाँ प्रत्येक युग में सहज रूप से स्वभावतः उद्भूत होती रही हैं। ये समाज को पुष्ट और स्वस्थ बनाने में सक्रिय सहयोग प्रदान करती हैं तथा इससे व्यक्ति और समाज का विकास स्वाभाविक गति से होता रहा है। कृषि और व्यापार आर्थिक जीवन के प्रमुख अंग हैं।***

---------------------------------X---------------------------------

## प्रस्तावना

चीनी यात्रियों ने बुद्ध से सम्बन्धित नगरों एवं क्षेत्रों का परिचय देते हुए तथा वहां के लोगों की विशेषताओं का परिचय देते हुए वे कुछ आक्समिक उल्लेख करते हैं। जो स्वतः उन स्थानों के आर्थिक महत्त्व का ज्ञान कराते हैं और यह सिद्ध होता है कि उनका भौतिक जीवन बड़ा ही सम्पन्न था। जिसका आधार कृषि व देश का बाहरी व भीतरी देशों से एक जीवन्त व्यापारिक सम्बन्ध। इन फुटकर विवरणों के आधार पर तत्कालीन भारत की आर्थिक स्थिति का पता चलता है।

## कृषि

प्राचीन काल से ही भारत की आर्थिक स्थिति का आधार कृषि रहा है। जब ह्वेनसांग भारत आया उस समय भी लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। ह्वेनसांग भारत के अनेक भागों में गया और उसने वहां की कृषि व प्रकृति का वर्णन किया। लंका देश के बारे में वह कहता है कि इस देश में चावल, गन्ना, अत्यधिक लकड़ी और अन्य फल पैदा होते हैं।[1] नगर द्वार देश अन्न की दृष्टि से सम्पन्न हैं। बहुत बड़ी मात्रा में फल-फूल पैदा होते हैं। गांधार नगर अन्न की दृष्टि से समृद्ध देश है और फल-फूल भी कई प्रकार के होते हैं। यहां गन्ना भी खूब होता है। जिससे वे ठोस गुड़ अथवा चीनी बनाते हैं।[2] कश्मीर सफन और फल और फूलों के लिए प्रसिद्ध था। तक्षशिला और सीमापुरा की मिट्टी फल और अच्छी फसलों के लिए काफी अच्छी है।

वह आगे बढ़ता हुआ जालंधर पहुंचा। यहां की भूमि भी खेती के लिए उपयुक्त थी। यहां धान की खेती ज्यादा होती थी। मथुरा के बारे में वह बताता है कि यहां मुख्य रूप से आंवले की खेती होती है जो कतारों में लगाए जाते हैं। ये आंवले दो प्रकार के होते थेः- एक तो छोटा जो कच्चा हरा तथा पकने पर पीला हो जाता है। दूसरा हरा होता है जो हमेशा ही हरा रहता है।

थानेश्वर की भूमि उत्तम और उपजाऊ है। यहां पर सब प्रकार का अन्न पैदा होता है। यहां के लोगों का ध्यान सांसारिक सुखों की ओर ज्यादा है। खेती-बाड़ी की ओर कम लोग दत्त चित्त होते हैं।[3] यहां की भूमि पर जाड़े में गेहूँ की खेती की जाती है।

---

[1] थामस वाटर्सः , ऑन च्वांग, ट्रैवल्स इन इंडिया, पृ. 181

[2] विशुद्धानन्द पाठक, पांचवी-सातवीं शताब्दी का भारत, पृ. 64

[3] ठाकुर प्रसाद शर्मा, ह्वेनसांग की भारत यात्रा, पृ. 121

www.ignited.in

कान्यकुब्ज अपने धन-संपदा के लिए प्रसिद्ध हैं। यहां सभी ओर फल-फूल बड़ी मात्रा में थे और फसल समय से बोई और काटी जाती थी। जलवायु सुखद और कोमल थी कपिल-वस्तु के बारे में वह कहता है कि यहां की जलवायु उष्ण है परन्तु बहुत गर्म नहीं है। यहां पर नियमित रूप से ऋतु के अनुसार खेती की जाती थी। वाराणसी की जवायु न तो बहुत ठण्डी है न बहुत गरम है। यहां पर खेती पर्याप्त मात्रा में होती है। यहां पर फल और अन्य पेड़ घने रूप में विद्यमान हैं तथा जबरदस्त हरियाली है।[4]

आगे वह गाजी पुर पहुंचा। जहां पर उसने देखा कि चारों तरफ फसलें उगी हुई हैं और नियमित रूप से खेती होती है और भूमि भी उपजाऊ है। वैशाली आम और केले की खेती के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर इन दोनों की खेती अधिक मात्रा में होती है। लोग इन फलों को चाव से खाते हैं। यहां की प्रकृति स्वाभाविक और सहज है।[5] मगध देश के बारे में ह्वेनसांग कहता है कि यहां की भूमि उत्तम और उपजाऊ है। यहां पर अनाज अधिक उगाया जाता है। यहां पर एक विशेष प्रकार का चावल उत्पन्न होता है जिसका दाना बड़ा होता है। यह अत्यन्त सुगन्धितम एवं खाने में बड़ा स्वादिष्ट होता है। यह चमकीला भी होता है। इसका नाम महाशिला या सुगन्धिका बताया जाता है।

कामरूप की भूमि यद्यपि निचली है परन्तु उपजाऊ और भली भांति जोती-बोयी जाती है। यह नगर पनस और नारियल की खेती के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर इनके वृक्ष यद्यपि असत्य हैं तो भी इनका बडा आदर और अच्छा दाम है।[6]

समतट एक ऐसा प्रदेश है जहां पर नियमित रूप से खेती होती थी और अन्न एवं फल-फूल सभी जगह होते थे। जलवायु नरम थी। कर्ण सुवर्ण मी भूमि दोमट और नीची है। भूमि पर नियमित रूप से खेती की जाती थी। यहां की जलवायु सुखद थी।

औद्र या उड़ीसा की भूमि के बारे में चीनी यात्री कहता है कि यहां की भूमि अत्यन्त उपजाऊ थी। अन्य स्थानों की अपेक्षा यहां हर प्रकार के फल-फूल बहत बड़ी मात्रा में उपजाए जाते थे।[7] कांगोध नगर की भूमि नीची और नम होते हुए भी उपजाऊ थी। यहां पर नियमित रूप से खेती होती थी। जलवायु गरम थी। कलिंग प्रदेश भी खेती बाड़ी में आगे था। यहां पर कई प्रकार की फसलें उत्पन्न की जाती थी। यहां की जलवायु भी गरम थी। यहां पर जंगल भी काफी जगह पर फैले हुए थे। चीनी यात्री आगे कोसल प्रदेश के बारे में बताता है कि यहां की भूमि उत्तम उपजाऊ और अच्छी फसल पैदा करने वाली है। आन्ध्र की जलवायु गर्म है, भूमि उत्तम और उपजाऊ है तथा नियमपूर्वक जोती एवं बोयी जाती है तथा अच्छी पैदावार होती है।[8]

धान्यकटक नगर की भूमि भी काफी उपजाऊ है और अच्छी पैदावार होने के कारण लोग सुखी व सम्पन्न हैं। चोल नगर की भूमि दलदली है तथा जलवायु गरम है। द्रविड़ प्रदेश की भूमि भी अत्यधिक उपजाऊ है। यहां पर खेती नियमित होती है जिस कारण अन्न बहुत पैदा होता है। फसलों के अलावा यहां पर फल-फूल भी बहत होते हैं।[9] मलयकूट चन्दन एवं कपूर के लिए प्रसिद्ध था जिससे चीनी यात्री बहत अधिक प्रभावित हुआ। वह यहां पर चन्दन के बहुत अधिक वृक्षों को देखता है।

कोंकण प्रदेश के बारे में चीनी यात्री ह्वेनसांग कहता है कि भूमि सम्पत्ति पूर्ण और उपजाऊ थी। उस पर नियन्त्रित रूप से खेती द्वारा भरपूर फसलें उत्पन्न की जाती थी। यहां की जलवायु गर्म थी।[10] वह महाराष्ट्र की भी जलवायु गर्म बताता है। यहां भूमि उत्तम और उपजाऊ है तथा समुचित रीति से बोयी जाने के कारण उत्तम फसलें उत्पन्न करती है। मालवा की भूमि अधिक उर्वरा और अधिक उपज देने वालजी है। यह प्रदेश फल-फूल और वृक्षों से भरपूर है। यहां पर जाड़े के दिनों में गेहँ की खेती की जाती है। चिकिटों नगर की भूमि उत्तम उपज के लिए प्रसिद्ध थी और योग्यतापूर्वक जोती-बोई जाती थी। जिसके कारण फसल अच्छी उत्पन्न होती थी। यहां पर सेम और जौ अधिक मात्रा में उगाये जाते थे। इसके अलावा यहां पर फल-फूल की भी बहुतायत रहती थी।[11]

सिन्धु प्रदेश में चीनी यात्री गेहूँ और बाजरे को देखता है। वह कहता है कि इस प्रदेश की भूमि अन्नादि उत्पत्ति के लिए उपयुक्त है तथा गेहूँ बाजरा आदि की अच्छी पैदावार होती है।[12]

मूलस्थान पर अथवा मुल्तान की भूमि सुसम्पन्न और उपजाऊ थी जिस कारण लोगों की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी। पर्वत के बारे में चीनी यात्री कहता है कि यहां धान अच्छा पैदा होता है तथा यहां की भूमि सेम और गेहूँ पैदा करने के लिए उपयुक्त है।

गुप्त काल में कृषि विकसित अवस्था में थी। लम्बे समय से भारतीय कृषि वर्षा पर निर्भर करती थी। वराहमिहिर ने अपनी

---

[4] विशुद्धानन्द पाठक, पांचवी-सातवीं शताब्दी का भारत, पृ. 105

[5] ठाकुर प्रसाद शर्मा, पूर्वोद्धृत, पृ. 228

[6] सैमुअल बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ़ वैस्ट्रन वल्ड, पृ. 196

[7] विशुद्धानन्द प्रसाद शर्मा, पूर्वोद्धृत, पृ. 128

[8] ठाकुर प्रसाद शर्मा, पूर्वोद्धृत, पृ. 365

[9] सैमुअल बील, पूर्वोद्धृत, खण्ड 2, पृ. 22

[10] विशुद्धानन्द पाठक, पूर्वोद्धृत, पृ. 35

[11] ठाकुर प्रसाद शर्मा, पूर्वोद्धृत, पृ. 414

[12] वही, पृ. 415

www.ignited.in

कृति बृहतसंहिता में वर्षा के विषय में अनेक तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं। उसने ज्योतिष के आधार पर नक्षत्रों का अध्ययन करके अधिक, कम या सामान्य वर्षा होने सम्बन्धी भविष्यवाणियां प्रस्तुत की हैं।[13] राज्य की तरफ से भी वर्षा न होने की स्थिति में कुछ सिंचाई के साधन जुटाने का भी प्रयत्न किया जाता था। जूनागढ़ अभिलेख इस बात का साक्षी है कि स्कन्दगुप्त ने (**455** ई-**58**ई.) में गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था। गुप्त काल में कृषियन्त्र परम्परागत ही थे। बृहतसंहिता के अनुसार मुख्य रूप से वर्ष में तीन फसलें होती थी, ग्रीष्म ऋतु (रबी), पतझड़ ऋतु (खरीफ) और साधारण समय में होने वाली फसलें।[14] ऐसी फसलों की चर्चा अमरकोष में भी हुई है। गेहूँ, धान, ज्वार, ईख, बाजरा, मटर, दाल, तिल सरसों, अलसी, अदरक, सब्जी, काली मिर्च आदि विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन उस युग में होता था।[15] उस युग में धान के निवार, शालि और कलम नाम के अनेक प्रकार हो गए थे।[16] यहां तक कि चावल की एक फसल **60** दिन में तैयार कर ली जाती थी।[17] मगध में उत्पन्न होने वाले चावल बहुत सुगन्धित होते थे। इसलिए इसकी मांग अधिक थी। परन्तु इसकी उपज मांग की अपेक्षा बहुत कम थी।[18] फलतः इसका विक्रय मूल्य अधिक था। जिस कारण साधारण जनता इसे खरीद नहीं पाती थी। वस्तुतः इस प्रकार के चावल प्रायः बड़े घरों के लोग खाते थे। हर्षचरित के विवरण के अनुसार श्री कण्ठ जनपद में चावल, गेहूँ, ईख आदि के अतिरिक्त सेम, अंगूर, अनार आदि भी उगाए जाते थे।[19]

इत्सिंग के विवरणों से पता चलता है, कि तत्कालीन भारत में ईख, चावल और तरबूज प्रचुर मात्रा में उगाए जाते थे, और इसके साथ अनेक फलों के उगाए जाने के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। केला, आम, द्राक्षा, कटहल आदि भी भारत के विभिन्न प्रदेशों में पाए जाते थे। केसर की खेती कश्मीर की घाटी और वृक्षु नदी के तट पर होती थी। इ्वेनसांग ने भी दारेल-अफगानिस्तान और कश्मीर में केसर की खेती का वर्णन किया है।[20] पाण्डेय देश में काली मिर्च इलायची और लौंग आदि की फसल पैदा होती थी। ह्वेनसांग ने अपने विवरण में भारतीय कृषकों के बारे में लिखा है, कि भारतीय किसान भूमि को जोतकर बुआई करते थे तथा फसल काटने के बाद आराम करते थे। प्याज और लहसुन की खेती बहुत कम होती थी क्योंकि बहुत कम लोग इसका उपयोग करते थे। उसने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले फलों के नाम भी बताए हैं, जैसे आँवला, मधुक, भद्र, कपित्थ आदि। उसके अनुसार वातावरण और भूमि किस्म की विभिन्नता के कारण अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग फसलें होती थीं।

## पशु-पालन

प्राचीन काल से ही पशुपालन भारतीयों का मुख्य व्यवसाय रहा है और कृषि के साथ-साथ पशु-पालन होता रहा है। क्योंकि पशुपालन कृषि का एक अभिन्न अंग रहा है। बैल, गधा, हाथी, घोड़े, लोमड़ी, बन्दर, कुत्ते, हिरा आदि के मांस खाने की बात चीनी यात्री करता है। जिससे पता चलता है कि सम्भवतः ये पालतू रहे होंगे। वह परियात्रा नगर की जलवायु को बैल व भेड़ पालने के लिए उत्तम बताता है।[21] इससे पता चलता है कि इस नगर में इन पशुओं की अधिकता थी। बैल संभवतः कृषि कार्यों में काम आता होगा और हाथी व घोड़ों का प्रयोग युद्ध व सवारी के लिए होता होगा। बृहतपुर नगर में घोड़े व भेड़ बहुत अधिक संख्या में पाले जाते थे। कामरूप नगर में ह्यूनसांग हाथियों के झुंड का उल्लेख करता है जिनका प्रयोग मुख्यतः युद्धों में होता था। कलिंग प्रदेश में भी वह हाथियों का उल्लेख करता है जो कि भूरे रंग वाले हैं जिनका प्रयोग युद्धों में होता होगा। आगे वह गुज्जर प्रदेश की जलवायु को बैल, भेड़ों, ऊंटो, खच्चर के अलावा अन्य पशुओं के लिए भी वह उत्तम बताता है। ह्वेनसांग ने भारत में कुछ स्थानों पर ही पशु-पालन देखा या अपने यात्रा वृतांतों में कुछ स्थानों को ही स्थान दिया है। परन्तु उस समय सम्पूर्ण भारत में पशु-पालन एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

कनिंघम, ए. (**1979**). प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, इलाहाबाद, **1979**

झा, डी.एन. कृष्णमोहन, श्री माली (**1985**). प्राचीन भारत का इतिहास बुद्धिज्म इन क्लासीकल ऐज, दिल्ली, **1985**

पाण्डेय, वी.सी. (**2014**). प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, **2014**

[13] बृहतसहिता, 2.6-9
[14] वही, 5.21, 9.42, 10.18, 27.1
[15] अमरकोष, 2.9, 3.9
[16] रघुवंश, 1.50, 4.20, 37.1
[17] अमरकोष, 3.9
[18] वाटर्स, पूर्वोद्धृत, पृ. 200
[19] हर्षचरित, 3
[20] थामस वाटर्स, पूर्वोद्धृत, पृ. 261
[21] विशुद्धानन्द पाठक, पूर्वोद्धृत, पृ. 79

पाठक, विशुद्धानन्द, बील, सैमुअल (**1995).** पांचवीं-सातवीं शताब्दी का भारत बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ द वेस्ट्न वल्ड, दिल्ली, **1995**

**Corresponding Author**

**Kritika Pareek***

Research Scholar, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan

**E-Mail – kritikapareek17680@gmail.com**